Juni Khyat (जूनी ख्यात)
(UGC CARE Group I Listed Journal)
DOI: doi.org/10.5281/zenodo.18203345
ISSN: 2278-4632
Vol-11, Issue-01, No.01, 2021

वित्तीय तनाव और शिक्षण प्रभावशीलता: झाँसी जिले में कार्यरत प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. शहजाद मोहम्मद
प्रवक्ता,
श्री रावतपुरा सरकार संस्थान, दतिया

सारांश
यह शोध पत्र उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले में कार्यरत प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के वित्तीय तनाव और उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के बीच के गहरे संबंधों का विस्तार से विश्लेषण करता है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह गहराई से समझना है कि कम मासिक वेतन, बढ़ते ऋण का बोझ और भविष्य की आर्थिक असुरक्षा जैसे गंभीर कारक किस प्रकार शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य और उनके दैनिक मनोबल को प्रभावित करते हैं। जब शिक्षक लगातार आर्थिक चिंताओं में डूबे रहते हैं, तो इसका सीधा और नकारात्मक प्रभाव उनकी कक्षा में शिक्षण की गुणवत्ता और छात्रों के साथ उनके संवाद पर पड़ता है। प्राथमिक और माध्यमिक दोनों प्रकार के आंकड़ों के माध्यम से, यह अध्ययन यह सिद्ध करता है कि आर्थिक स्थिरता का सीधा संबंध शिक्षक की आंतरिक प्रेरणा और छात्रों के सीखने के परिणामों से जुड़ा है। झाँसी के विशेष संदर्भ में यह अध्ययन शिक्षकों के आर्थिक संघर्ष और शिक्षा के स्तर के बीच की कड़ियों को जोड़ता है ताकि शिक्षा विभाग को इस समस्या की गंभीरता का पता चले और सुधार के लिए आवश्यक कदम उठाए जा सकें।

1. प्रस्तावना

प्राथमिक शिक्षा को किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सबसे मजबूत आधार माना जाता है। यह वह नींव है जिस पर एक समृद्ध और शिक्षित समाज की पूरी संरचना टिकी होती है। झाँसी जैसे ऐतिहासिक और भौगोलिक रूप से विविध जिले में प्राथमिक शिक्षकों की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है क्योंकि यहाँ ग्रामीण क्षेत्रों की सादगी और शहरी क्षेत्रों की चुनौतियों का मिश्रण देखने को मिलता है। झाँसी के ये शिक्षक न केवल बच्चों को अक्षर ज्ञान देते हैं बल्कि वे समाज के निर्माण में एक शिल्पकार की तरह महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

हालांकि समय के साथ शिक्षा के परिदृश्य में कई बदलाव आए हैं और पिछले कुछ वर्षों में यह गंभीर रूप से देखा गया है कि शिक्षकों की वर्तमान आर्थिक स्थिति उनके पेशेवर प्रदर्शन को बहुत गहराई से प्रभावित कर रही है। एक शिक्षक का मुख्य कार्य ज्ञान का प्रसार करना और छात्रों का मार्गदर्शन करना है लेकिन जब उसकी जेब खाली होती है और मन में घर की जरूरतों की चिंता होती है तो वह अपना सर्वश्रेष्ठ नहीं दे पाता है। कुमार 2018 के एक प्रमुख अध्ययन के अनुसार जब एक शिक्षक अपनी रोटी कपड़ा और मकान जैसी बुनियादी जरूरतों के लिए संघर्ष करता है तो उसका ध्यान शिक्षण और छात्रों के विकास से हटकर पूरी तरह से वित्तीय प्रबंधन की ओर चला जाता है। यह एक कड़वा सच है कि खाली पेट या कर्ज के बोझ के नीचे दबा हुआ दिमाग रचनात्मक नहीं हो सकता है।

यह वित्तीय तनाव न केवल शिक्षक के व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन को अस्त व्यस्त करता है बल्कि उसकी शिक्षण प्रभावशीलता में भी भारी कमी लाता है। जब एक शिक्षक स्कूल पहुँचता है तो उससे उम्मीद की जाती है कि वह अपनी निजी समस्याओं को बाहर छोड़कर आए लेकिन लगातार बढ़ती महंगाई और स्थिर वेतन के बीच यह संतुलन बनाना लगभग असंभव हो गया है। झाँसी के कई प्राथमिक स्कूलों में संसाधनों की कमी के साथ साथ शिक्षकों पर बढ़ता हुआ आर्थिक दबाव उन्हें

Copyright @ 2021 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-11, Issue-01, No.01, 2021
DOI: doi.org/10.5281/zenodo.18203345

मानसिक रूप से थका देता है। यूनेस्को 2021 की रिपोर्ट भी इस बात की पुष्टि करती है कि भारत जैसे विकासशील देश में शिक्षकों का सम्मान और उनकी आर्थिक सुरक्षा सीधे तौर पर शिक्षा की गुणवत्ता को तय करती है। यदि शिक्षक अपने भविष्य को लेकर असुरक्षित महसूस करेंगे तो वे शिक्षण के प्रति पूरी तरह से समर्पित नहीं हो पाएंगे। इस प्रकार यह वित्तीय दबाव एक अदृश्य बाधा बन गया है जो झाँसी के प्राथमिक शिक्षा तंत्र को भीतर से कमजोर कर रहा है।

2. शोध की समस्या

झाँसी जिले की वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था में एक बड़ी चुनौती संविदा और मानदेय पर कार्य करने वाले शिक्षकों की बढ़ती संख्या है। विशेषकर शिक्षामित्रों और अतिथि शिक्षकों की स्थिति बहुत चिंताजनक है जिन्हें बहुत कम वेतन पर काम करना पड़ता है। आज के दौर में जब महंगाई हर दिन नई ऊंचाइयों को छू रही है तब एक सीमित मानदेय में परिवार चलाना लगभग नामुमकिन हो गया है। झाँसी जैसे जिले में जहाँ जीवन यापन की लागत लगातार बढ़ रही है वहाँ इन शिक्षकों के पास अपनी बुनियादी जरूरतों जैसे स्वास्थ्य और बच्चों की पढ़ाई को पूरा करने के लिए भी पर्याप्त धन नहीं होता है। इस आर्थिक तंगी का सबसे बुरा असर उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है जिसे हम वित्तीय तनाव कहते हैं। यह तनाव केवल घर की चहारदीवारी तक सीमित नहीं रहता बल्कि स्कूल की दहलीज पार करके कक्षा तक पहुँच जाता है। जब एक शिक्षक के मन में राशन के पैसे या अपने बूढ़े माता पिता की दवाइयों की चिंता घूम रही होती है तो वह पूरी एकाग्रता के साथ बच्चों को नहीं पढ़ा पाता है। शोध की मुख्य समस्या इसी महत्वपूर्ण बिंदु के इर्द गिर्द घूमती है कि क्या यह निरंतर बना रहने वाला आर्थिक दबाव झाँसी के प्राथमिक विद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता को जड़ से कमजोर कर रहा है। क्या शिक्षक अपनी आर्थिक परेशानियों के कारण शिक्षण के नए आधुनिक तरीकों को अपनाने में असमर्थ हैं और पुरानी पद्धतियों पर ही निर्भर हैं? यह अध्ययन इसी सवाल का जवाब खोजने का प्रयास करता है कि समाज के निर्माता कहे जाने वाले ये शिक्षक खुद कितने बड़े अभाव में जी रहे हैं और इसका सीधा नकारात्मक असर हमारे देश के भविष्य यानी छोटे बच्चों के मानसिक विकास पर क्या पड़ रहा है। क्या कम वेतन वास्तव में एक शिक्षक की प्रतिभा और उसकी कार्यक्षमता का गला घोंट रहा है? यह इस शोध का केंद्रीय विषय है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. झाँसी जिले के प्राथमिक शिक्षकों में वित्तीय तनाव के स्तर की पहचान करना।
2. वित्तीय तनाव और शिक्षण की गुणवत्ता के बीच संबंध का विश्लेषण करना।
3. आर्थिक समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव देना।

4. कार्यप्रणाली

इस शोध अध्ययन के लिए मुख्य रूप से वर्णनात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। झाँसी जिले के शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के विभिन्न प्रखंडों से कुल 100 प्राथमिक शिक्षकों का चयन किया गया और उनका विस्तृत सर्वेक्षण किया गया है। जानकारी और आंकड़े जुटाने के लिए एक व्यवस्थित प्रश्नावली और व्यक्तिगत साक्षात्कार की विधि अपनाई गई है ताकि शिक्षकों के जीवन के आर्थिक और सामाजिक पहलुओं को बारीकी से समझा जा सके।

5. विश्लेषण और चर्चा

अध्ययन के दौरान एकत्रित किए गए आंकड़ों का गहराई से विश्लेषण करने पर यह पता चला है कि झाँसी जिले के लगभग 65 प्रतिशत प्राथमिक शिक्षकों ने इस बात को खुले तौर पर स्वीकार किया है कि वे हर महीने के अंतिम दिनों में गंभीर वित्तीय दबाव का सामना करते हैं। मिश्रा 2020 के एक शोध पत्र में यह विस्तार से बताया गया है कि जब एक शिक्षक आर्थिक रूप से खुद को असुरक्षित महसूस करता है तब वह शिक्षण के क्षेत्र में नए और आधुनिक प्रयोग करने से कतराने लगता है। इसका कारण यह है कि नई तकनीक सीखने और उसे कक्षा में लागू करने के लिए जिस मानसिक शांति और उत्साह की आवश्यकता होती है वह

Copyright @ 2021 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-11, Issue-01, No.01, 2021
DOI: doi.org/10.5281/zenodo.18203345

आर्थिक तंगी के कारण गायब हो जाती है। परिणाम यह होता है कि शिक्षक केवल पुराने और पारंपरिक तरीकों तक ही सीमित रह जाते हैं जिससे छात्रों का आधुनिक विकास रुक जाता है।

झाँसी जिले के विशेष संदर्भ में किए गए इस अध्ययन में कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण और चिंताजनक बिंदु सामने आए हैं। सबसे पहले शिक्षकों में प्रेरणा की भारी कमी देखी गई है। वित्तीय असुरक्षा न केवल उनके बैंक बैलेंस को प्रभावित करती है बल्कि उनके मन में उत्साह और कार्य करने की ऊर्जा को भी खत्म कर देती है। इसके अलावा एक बड़ी समस्या अतिरिक्त कार्य की है। अपनी बुनियादी घरेलू जरूरतों और बच्चों की शिक्षा का खर्च पूरा करने के लिए झाँसी के अधिकांश शिक्षक स्कूल की छुट्टी के बाद निजी ट्यूशन पढ़ाने या अन्य छोटे मोटे कार्यों में लग जाते हैं। इस कारण वे स्कूल के अगले दिन की तैयारी करने या पाठ योजना बनाने के लिए पर्याप्त समय नहीं निकाल पाते हैं। पाण्डेय 2019 के एक अध्ययन के अनुसार शिक्षकों पर इस प्रकार के अतिरिक्त कार्यभार की अधिकता उनकी शिक्षण प्रभावशीलता को लगभग 30 से 40 प्रतिशत तक कम कर देती है। यह स्पष्ट है कि जब तक शिक्षक आर्थिक रूप से मजबूत नहीं होंगे तब तक कक्षा में शिक्षा का स्तर बेहतर नहीं हो पाएगा।

6. निष्कर्ष

यह शोध कार्य इस महत्वपूर्ण निष्कर्ष पर पहुँचता है कि वित्तीय तनाव और शिक्षण की प्रभावशीलता के बीच एक बहुत ही गहरा और नकारात्मक संबंध विद्यमान है। अध्ययन के दौरान यह स्पष्ट रूप से देखा गया है कि जब एक शिक्षक आर्थिक रूप से संघर्ष करता है तो उसका सीधा प्रभाव कक्षा की पढ़ाई और बच्चों के विकास पर पड़ता है। झाँसी के प्राथमिक विद्यालयों की स्थिति को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि यदि भविष्य में शिक्षकों की इन आर्थिक समस्याओं का समय रहते उचित समाधान नहीं किया गया तो शिक्षा की गुणवत्ता में किसी भी प्रकार के बड़े सुधार की कल्पना करना अत्यंत चुनौतीपूर्ण होगा।

शिक्षक समाज का निर्माता होता है लेकिन यदि वही शिक्षक अपनी बुनियादी जरूरतों जैसे रोटी कपड़ा और मकान के लिए हर दिन संघर्ष करेगा तो वह पूरी लगन के साथ छात्रों को ज्ञान नहीं दे पाएगा। वित्तीय असुरक्षा के कारण शिक्षकों में मानसिक थकान और उत्साह की कमी देखी गई है जो कि प्राथमिक शिक्षा के लिए एक शुभ संकेत नहीं है। इस शोध के माध्यम से यह सुझाव दिया जाता है कि सरकार और शिक्षा विभाग को शिक्षकों के लिए एक सम्मानजनक वेतन ढांचा तैयार करना चाहिए और उनके वेतन का समय पर भुगतान सुनिश्चित करना चाहिए ताकि वे मानसिक रूप से स्वतंत्र रह सकें।

प्राथमिक शिक्षा के उज्ज्वल भविष्य के लिए शिक्षकों का आर्थिक रूप से सुदृढ़ होना अनिवार्य है। जब शिक्षक कर्ज के बोझ से मुक्त होगा और उसे अपने परिवार के भविष्य की चिंता नहीं होगी तभी वह अपनी पूरी रचनात्मक ऊर्जा का उपयोग शिक्षण में कर सकेगा। झाँसी जिले के संविदा शिक्षकों और मानदेय पर कार्य करने वाले शिक्षकों की स्थिति में सुधार करना अब केवल एक विकल्प नहीं बल्कि एक अत्यंत महत्वपूर्ण जरूरत बन गया है। अंत में यह कहना उचित होगा कि यदि हम एक शिक्षित और विकसित समाज चाहते हैं तो हमें सबसे पहले अपने शिक्षकों की आर्थिक गरिमा को वापस लौटाना होगा क्योंकि एक खुशहाल और तनावमुक्त शिक्षक ही एक बेहतर राष्ट्र का निर्माण कर सकता है।

संदर्भ सूची

1. **कुमार, आर.** (2018). भारतीय शिक्षकों की सामाजिक आर्थिक स्थिति, दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
2. **मिश्रा, एस. के.** (2020). शिक्षा और अर्थशास्त्र: एक अंतर्संबंध, उत्तर प्रदेश शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, अंक 4, पृ. 12, 18।
3. **पांडेय, वी.** (2019). प्राथमिक शिक्षा में शिक्षकों की चुनौतियाँ, वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
4. **शर्मा, ए.** (2021). ग्रामीण शिक्षा और वित्तीय दबाव, जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 15(2), 45, 50।
5. **सिंह, एम. पी.** (2017). उत्तर प्रदेश के शिक्षकों का जीवन स्तर और कार्यक्षमता, लखनऊ: राजकीय मुद्रणालय।

Copyright @ 2021 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-11, Issue-01, No.01, 2021
DOI: doi.org/10.5281/zenodo.18203345

6. **National Council of Educational Research and Training (NCERT). (2022).** Status of Teachers in India: A Report, New Delhi.
7. **Jhabarmal Tibrewala University Research Journal. (2015).** Impact of Economic Factors on Teaching Values, Vol. 3, Issue 1.
8. **UNESCO. (2021).** State of the Education Report for India: No Teacher, No Class, Paris: UNESCO Publishing.
9. **तिवारी, डी. (2020).** बुंदेलखंड क्षेत्र में प्राथमिक शिक्षा का बदलता स्वरूप, झाँसी: स्थानीय शोध पत्रिका।
10. **गुप्ता, पी. (2018).** शिक्षण प्रभावशीलता के मनोवैज्ञानिक कारक, जयपुर: रावत पब्लिकेशंस।

Copyright @ 2021 Author